

Rohitas Mahila College, SASARAM

Study Material For B.A. Part II ~~XXXXXX~~
(SANSKRIT)

Dr. Saurini Singh,
Associate Professor,
Dept. of Sanskrit,
R.M.C. SASARAM

काव्यदीपिका शिवशर्मा

Date :
27.05.2020

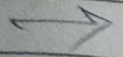
Wednesday
Paper VII

Topic: शब्दशास्त्र : लक्षणा

स्नातक भाग तीन में प्रस्तावित पाठ्यपुस्तक काव्यदीपिका (श्रीमान्निवृत्तभद्राचार्यसंकलिता) में लक्षणा के स्वल्प का वर्णन और उल्लेख करते हुए आचार्य विद्वानों के मुख्यमन्त्रियों तदुक्तों --- शक्तिरूपिता का उल्लेख किया गया है इस क्रम में पूर्व में हमने लक्षणा के दो भेदों शब्द लक्षणा और प्रयोजनवती लक्षणा को समझने की कोशिश की। जिस क्रम में 'कलिंगः सहस्रिड वाक्त्र मे' किस प्रकार शब्द लक्षणा द्वारा शब्द की प्रतीति हो रही है इसे समझा।

अनन्तर प्रयोजनवती लक्षणा को समझते हैं 'गंगायां घोषः' - गंगा के तट पर बनी हुई कोपड़ी को देखकर किसी ने कहा है कि 'यह मे कोपड़ी तौ गंगा में बनी होगी' तब गंगा तो स्थान विशेष अथवा स्थल आग विशेष में संवक्षित होने वाली जलधारा है, जल प्रवाह है। उसमें कोपड़ी अथवा छुटिया कैसे हो सकती है।

अतः 'गंगायां घोषः' में गंगा शब्द अपने मुख्य अर्थ को छोड़कर उससे सम्बद्ध गंगातटस्थी अर्थ का लक्षणा शास्त्र से बोध कराता है। इस वाक्य में वक्ता का प्रयोजन



यह प्रकट करना है कि जहाँ कुरिया वनी है वह लान ठोसा और पवित्र है, मानो गंगा का प्रवाह ही है। इस प्रकार ठण्डेपन और पवित्रता के आधिक्य को व्यक्त करने के लिए ही उसने गंगा में झोपड़ी है। इस वाक्य का प्रयोग किया। किसी प्रयोजन से जिस लक्षणा का प्रयोग किया जाय उसे प्रयोजनवती लक्षणा कहते हैं।

इस प्रकार लक्षणा यदि और प्रयोजन के भेद से दो प्रकार की हुई। इन दोनों लक्षणाओं में भी दो दो भेद कहे जाते हैं। उपादान लक्षणा और लक्षणलक्षणा। इस प्रकार लक्षणा, प्रयोजनवती, उपादान लक्षणा और लक्षणलक्षणा चार प्रकार की होती है।

उपादान लक्षणा :

स्वसिद्धये पराक्षेपेऽसावुपादानलक्षणा ।

अपने अर्थ को बोध कराने के लिए जहाँ पर दूसरे पद का आक्षेप किया जाता है, उसे उपादानलक्षणा कहते हैं। इस प्रकार वाच्यार्थ के अन्वयबोध के लिए जहाँ लक्ष्यार्थ बोध में वाच्यार्थ से सम्बद्ध लक्ष्यार्थ का बोध होता है, वह उपादानलक्षणा कही जाती है। जैसे 'यद्यथाः प्रविशन्ति (लाडियों प्रवेश कर रही हैं) यह अचेतन होने के कारण यदि का स्वतः प्रवेश करना सम्भव नहीं है। अब यदि पद से यदि-कारी पुरुष का आक्षेप किया जाता है, लाडी वालों के प्रवेश के साथ ही लाडियों का प्रवेश उचित है। अब इसे उपादानलक्षणा कहते हैं। इस लक्षणा में पद अपने अर्थ को न छोड़कर अन्वयबोध के लिए पदान्तर का आक्षेप करके उनके साथ लय अन्वित हो, अप्रबोध करता है, इसलिए इसे अजहद स्वार्थगी कहते हैं।